विश्वनाथ सचदेव

'ए', 'दी' और पत्रकारिता

जीवन के अन्य क्षेत्रों की तरह पत्रकारिता में भी बहुत कुछ सीखना पड़ता है, लगातार सीखना पड़ता है। यह सही है कि पत्रकारिता की पढ़ाई मात्र से कोई पत्रकार नहीं बन जाता, लेकिन यह पढ़ाई किसी पत्रकार को अच्छा पत्रकार बनाने में मददगार अवश्य होती है।

चालीस-पैंतालीस साल पुरानी बात है। नागपुर के हिसलप कालेज में मैं पत्रकारिता की पढ़ाई करने गया था। विभाग का एक क्लब था, जिसमें भाषण प्रेस-कान्फ्रेन्स आदि भी आयोजित किये जाते थे। एक दिन हमने वरिष्ठ साहित्यकार-पत्रकार नागपुर टाइम्स के संपादक श्री अनंत गोपाल शेवड़े को क्लब में आमंत्रित किया। फोन पर दिया गया निमंत्रण तो उन्होंने स्वीकार कर लिया, लेकिन वे चाहते थे कि कार्यक्रम से पहले उनसे बात कर ली जाये। दिन और समय तय हो गया। वहाँ जाने के लिए जब मैं हॉस्टल से निकलने लगा तो बारिश होने लगी थी। मैंने सोचा कुछ देर बाद चला जाऊँगा, क्या फर्क पड़ता है। लेकिन फर्क पड़ता था। मैं जब निर्धारित समय से लगभग पौन घंटा देरी से शेवड़े जी के घर पहुँचा तो मेरी प्रतीक्षा में बैठे थे। लेकिन विलम्ब से वे असंतुष्ट थे, यह बात उन्होंने छिपायी नहीं। फिर उन्होंने कहा था, ''बरखुरदार, पत्रकारिता का पहला पाठ आज पढ़ लो, समय और समाचार कभी तुम्हारा इंतजार नहीं करेंगे।''

तब से लेकर आज तक मैं यह बात भूला नहीं हूँ। अपने युवा पत्रकार साथियों को अक्सर बताता रहता हूँ यह बात और अक्सर सोचा करता हूँ शेवड़े जी न सिखाते तो क्या मैं यह बात सीख पाता? अनुभव सिखा देता शायद, लेकिन शेवड़ेजी द्वारा पढ़ाये गये उस पाठ को मैंने हिसलप कॉलेज की पत्रकारिता की पढ़ाई के एक हिस्से के रूप में स्वीकारा-समझा था। वरिष्ठ पत्रकार द्वारा पढ़ाया गया वह पाठ मुझे अक्सर यह अहसास भी कराता रहता है कि हर क्षेत्र की तरह पत्रकारिता में भी बहुत कुछ सीखना पड़ता है। अनुभव बहुत कुछ सिखाता है, लेकिन सब कुछ नहीं। यह विडम्बना ही है कि सामान्य धारणा यह है कि पत्रकारिता के लिए कुछ सीखने की आवश्यकता नहीं होती भीतर कहीं पत्रकार बनने की तीव्र इच्छा होनी चाहिए। एक सहज प्रवृत्ति होती हैं जो व्यक्ति को पत्रकार बना सकती है; यह ऐसा काम है जो करते-करते करना आ जाता है। यह तीनों बातें गलत नहीं, लेकिन यह मानना भी सही नहीं है कि जन्मजात प्रवृत्ति और अनुभव से ही कोई अच्छा पत्रकार बन सकता है या बन जाता है। वैसे, हमारी पत्रकारिता के सारे पुराने उदाहरण उस तर्क के समर्थन में प्रस्तुत किये जा सकते हैं कि पत्रकार बनाये नहीं जाते पत्रकार पैदा होते हैं। महात्मा गाँधी, लोकमान्य तिलक, माखनलाल चतुर्वेदी, गणेशशंकर विद्यार्थी, बाबूराव विष्णु पराड़कर ..... एक लम्बी सूची है उन महान पत्रकारों की, जिन्होंने पत्रकारिता के कीर्तिमान स्थापित किये हैं, पत्रकारिता को दिशा दी है। उन्होंने पत्रकारिता का कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं लिया था, कोई डिग्री नहीं प्राप्त की थी। औपचारिक प्रशिक्षण की अनिवार्यता को खारिज करते यह उदाहरण गलत नहीं हैं और यह भी सही है कि कोई डिग्री प्राप्त कर लेने से ही कोई पत्रकार नहीं बन जाता तो फिर पत्रकारिता का पाठ पढ़ाने वाली शेवड़ेजी वाली बात का क्या तुक है?

श्री चलपतिराव

जरूरी है कि पत्रकारिता के प्रशिक्षण में बदलती तकनीक और बदलते संदर्भों को भी शामिल किया जाये और इसके साथ साथ इतिहास, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र की बारीकियों को भी पढ़ाया-समझाया जाये।

पत्रकारिता के प्रशिक्षण के समर्थन में जो तर्क दिये जाते हैं, उनमें से एक दमदार तर्क यह है कि यदि डाक्टरी करने के लिए कम से कम एम.बी.बी.एस. होना जरूरी है, वकालत की डिग्री लेने के बाद ही वकील बना जा सकता है तो पत्रकारिता जैसे महत्वपूर्ण पेशे को किसी के लिए भी खुला कैसे छोड़ा जा सकता है? सच तो यह है कि पत्रकारिता का महत्वपूर्ण पेशा होना ही यह सवाल उठाता है कि हर कोई पत्रकार कैसे बन सकता है? कल तक पत्रकारिता को एक मिशन के रूप में ही देखा जाता था। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पूर्व से लेकर कुछ अर्सा बाद तक यह प्रवृत्ति बनी रही। लेकिन बदलते समय का तकाजा था हमारी पत्रकारिता भी बदलती। आज पत्रकारिता पेशा बनती जा रही है, व्यवसाय बनती जा रही हैं- लेकिन विशिष्ट व्यवसाय है यह। यही विशिष्टता इस पेशे को दायित्वों से जोड़ती है। व्यवसाय होने के बावजूद आज भी पत्रकारिता जनतंत्र का चौथा स्तंभ है और जरूरी मात्र यही नहीं है कि यह स्तंभ मजबूत रहे, इस स्तंभ का एक काम यह देखना भी है कि जनतंत्र के बाकी तीनों स्तंभ अपना दायित्व अच्छी तरह से निभाते रहें। यही नहीं, जनतंत्र में पत्रकारिता सिर्फ प्रहरी की भूमिका नहीं निभाती, मार्ग दर्शक की भूमिका भी निभाती है। पत्रकार का काम मात्र सूचना देने तक ही सीमित नहीं होता, उसे सूचना के निहितार्थ भी समझाने होते हैं। उसे लक्ष्य भी बताने होते हैं और लक्ष्यों तक पहुँचाने वाले रास्तों की समीक्षा भी करनी होती है।

पाठक सिर्फ खबरें पढ़ने के लिए समाचार पत्र नहीं पढ़ते, और न ही टी.वी. की खबरों का अर्थ घटनाओं की जानकारी मात्र होता है। खबरें समझना चाहते हैं लोग। पत्रकारिता यही समझाने का काम करती है- या उसे करना चाहिए यह काम। स्पष्ट है, यह काम करने वाला उसके योग्य भी होना चाहिए। यह योग्यता अर्जित करनी होती है। अर्जित करने की क्षमता किसी में भी हो सकती है, लेकिन सवाल इस क्षमता के उपयोग का है। पत्रकारिता का प्रशिक्षण एक बड़ी सीमा तक यह काम करता है। मैं समय पर नहीं पहुँचूँगा तो खबर मेरे हाथ से निकल सकती है, यह बात कोई भी अपना सकता है। लेकिन जब कोई शेवड़े पत्रकारिता के पहले पाठ के रूप में इसे समझता है तो जिंदगी भर यह पाठ नहीं भूलता। सवाल सिर्फ इस तरह के पाठ याद रखने का ही नहीं है, सवाल अपने आप को एक विशिष्ट व्यवसाय के लिए तैयार करने का है, स्वयं को इस काबिल बनाने का है कि पत्रकारिता के उन दायित्वों को निर्वाह की क्षमता पनप सके जो पेशे को विशिष्ट बनाते हैं - सच कहा जाये तो एक मिशन बनाते हैं।

आइए, इस क्षमता को थोड़ा समझ लें। पत्रकारिता का मतलब सूचना देना ही नहीं होता, और न ही सही भाषा में अच्छी शैली में लिखना मात्र होता है। उदाहरण के लिए यह एक समाचार हो सकता है कि देश में खाद्यान्न की कमी नहीं है लेकिन मात्र यह तथ्य पूरा समाचार नहीं बनता। तथ्य यह भी है कि खाद्यान्न की कमी न होने के बावजूद देश की लगभग आधी आबादी भूखे पेट सोती है। इस तथ्य का खाद्यान्न की कमी न होने वाले तथ्य से क्या रिश्ता है? गोदामों में भरा हुआ अनाज भूखे के पेट तक क्यों नहीं पहुँच पाता? मँहगाई की दर कम होने और फिर भी मँहगाई बढ़ते जाने का क्या तर्क है? शिक्षा के अधिकार और चौथी-पाँचवीं तक पहुँचते-पहुँचते ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों के स्कूलों से पलायन का क्या समीकरण है? मतदान का प्रतिशत बढ़ने और राजनीति में आम आदमी की आस्था कम होते जाने का क्या मतलब है? यह और ऐसे अनेकों सवाल हैं जो किसी पत्रकार की क्षमता की परीक्षा लेते हैं। कहीं न कहीं पत्रकारिता को इन प्रश्नों से भी जूझना होता है। इन जैसे प्रश्नों के जवाब ही सूचना को पूर्ण और सार्थक बनाते हैं। इस पूर्णता और सार्थकता को समझना और पाना एक विशेष अनुशासन की माँग करता है, एक संतुलित समझ को विकसित होने की अपेक्षा करता है। यह अनुशासन और संतुलन अर्जित करना पड़ता है। इसके लिए कभी अनुभव सक्षम बनाता है और कभी कोई अनंत गोपाल शेवड़े।

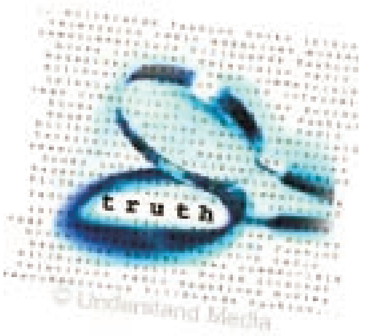

इस अनंत गोपाल शेवड़े का एक नाम प्रशिक्षण भी है। खबर और उसकी सार्थकता से लेकर खबर की प्रस्तुति तक की समूची

प्रक्रिया प्रशिक्षण की अपेक्षा रखती है।

कुछ बीमारियाँ तो दादी-नादी के टोटके भी ठीक कर देते हैं। कुछ बीमारियाँ एम.बी.बी.एस. के बस की भी नहीं होती, विशेषज्ञ डाक्टरों के पास जाना पड़ता है। डाक्टर योग्यता और विशेषज्ञता स्वयं अर्जित करते हैं। कुछ ऐसा ही डाक्टरी जैसा पेशा है पत्रकारिता भी। जैसे डाक्टर से हम योग्यता और बीमार को ठीक करने की ईमानदार कोशिश की अपेक्षा करते हैं, वैसे ही पत्रकार से भी अपेक्षा की जाती है योग्यता, ईमानदारी और संवेदनशीलता की। जन्मजात भी हो सकते हैं ये गुण, लेकिन जैसे हीरे को तराश कर चमकाया जाता है वैसी ही जरूरत पत्रकार को भी होती है। यहीं काम आता है किसी शेवड़े का पढ़ाया पहला पाठ और औपचारिक प्रशिक्षण।

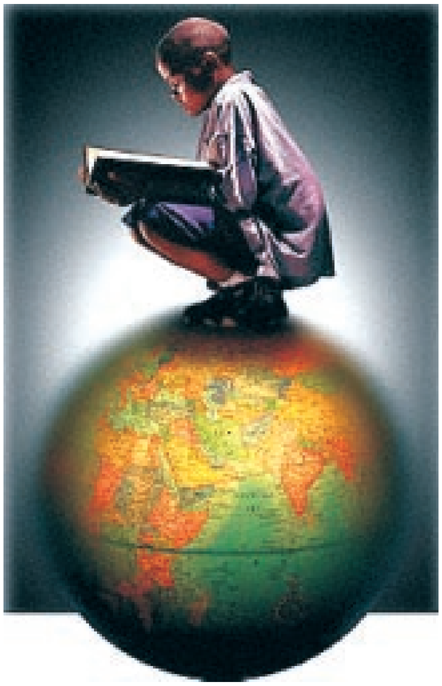

नागपुर के हिसलप कालेज से पत्रकारिता की डिग्री लेने के बाद जब मैं टाइम्स ऑफ इंडिया संस्थान में आया तो यहाँ भी मुझे साल भर ट्रेनी जर्नलिस्ट ही कहा गया। बाकायदा क्लास लगती थी प्रशिक्षु पत्रकारों की। टाइम्स के अनुभवी पत्रकार पतंजलि सेठी हमारे इंचार्ज थे। जब पहले ही दिन उन्होंने कहा, ''मिस्टर विश्वनाथ, यह सब आपके लिए परिचित-सा होगा, लेकिन आप यह भी पायेंगे कि हम कुछ अलग-सा और अलग तरीके से सिखा रहे हैं संस्थान की जरूरतों और परम्पराओं के अनुरूप यह एक और पाठ था।'' टाइम्स की ट्रेनिंग ने मुझे पत्रकार नहीं बनाया 'टाइम्स का पत्रकार' बनाया। 'हिसलप' और 'टाइम्स' के बीच एक और पड़ाव था जिसने मेरे भीतर के पत्रकार को जगाया भी और सँवारा भी। हिसलप से पत्रकारिता की स्नातकोत्तर डिग्री लेकर मैं लखनऊ गया था- नेशनल हेरल्ड में। तीन माह प्रशिक्षण लिया था मैंने वहाँ, देश के महान पत्रकारों में गिने जाने वाले श्री चलपति राव के सम्पादन में तीन महीन बाद जब मैं वहाँ से जाने लगा तो श्री राव ने एक और पाठ पढ़ाया था पत्रकारिता का ''विश्वनाथ'', दि होल वर्ल्ड इज बिफोर यू,--------- प्लीज रिमेम्बर, वेयर टु पुट ए एण्ड वेयर टु पुट दी' (अब सारी दुनिया तुम्हारे समाने है पर याद रहे कि 'दी' कहाँ लगाना है और ए कहाँ) सुनकर मैं थोड़ा चौंका था, मुझे लगा मेरी भाषा की गलतियों पर टिप्पणी कर रहे हैं वे। शायद मेरा चेहरा उतर गया था यह सुनकर। तभी उन्होंने कहा था, 'मुझे गलत मत समझो' मेरे साथ लोग पच्चीस पच्चीस साल से काम कर रहे हैं, पर अभी तक नहीं समझते 'ए' और 'दी' का अंतर। फिर उन्होंने यह भी समझाया था कि सवाल भाषा की शुद्धता का नहीं है सवाल चीजों को, बातों को समझने का है। उनका महत्व समझने का उन्हें परिप्रेक्ष्य में रखने का है।

यह सारी बातें मैं क्यों लिख रहा हूँ? इसलिए कि मुझे लगता है, जीवन के अन्य क्षेत्रों की तरह पत्रकारिता में भी बहुत कुछ सीखना पड़ता है, लगातार सीखना पड़ता है। यह सही है कि पत्रकारिता की पढ़ाई मात्र से कोई पत्रकार नहीं बन जाता, लेकिन यह पढ़ाई किसी पत्रकार को अच्छा पत्रकार बनाने में मददगार अवश्य होती है। जिस परिप्रेक्ष्य की बात श्री चलपति राव ने की थी, वह परिप्रेक्ष्य और एक अपेक्षित दृष्टिकोण, इस पढ़ाई से मिल सकता है। एक जमीन तैयार करने का काम करती है पत्रकारिता की पढ़ाई ताकि फसल उग सके- अच्छी फसल उगे। अच्छी फसल का मतलब अच्छा पत्रकार। पत्रकार जो पेशे के प्रति ईमानदार हो, समाज के प्रति अपने दायित्वों के प्रति जागरूक हो और व्यावसायिकता की जरूरतों को समझने के साथ यह भी समझे कि पत्रकारिता एक विशिष्ट व्यवसाय है। सवाल सिर्फ बदलती पत्रकारिता की तकनीक को समझने का ही नहीं है, सवाल उन बुनियादी मुद्दों का भी है जो पत्रकारिता को अर्थवान बनाते हैं। इसलिए जरूरी है कि पत्रकारिता के प्रशिक्षण में बदलती तकनीक और बदलते संदर्भों को भी शामिल किया जाये और इसके साथ साथ इतिहास, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र की बारीकियों को भी पढ़ाया- समझाया जाये। तभी हमारे आने वाले कल के पत्रकार इस 'ए' और 'दी' का अंतर और महत्व भी समझ पायेंगे जिसकी बात चलपतिराव ने कही थी। चीजों को पूरे सन्दर्भों में समझना-समझाना, घटनाओं को मानवीय दृष्टिकोण से अनुभव और प्रस्तुत करना पत्रकारिता की महती आवश्यकता है। यह सब भी पत्रकारिता के प्रशिक्षण का हिस्सा होना चाहिए। तभी प्रशिक्षण सार्थक होगा, पत्रकारिता सार्थक बनेगी।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं नवनीत के संपादक हैं।